''शिक्षा एवं जनसंख्या नियंत्रण''

डॉ० कुसुम कुमारी*

मानव अपनी ही संख्या बढ़ाकर दारूण दुःख प्राप्ति की अनजाने में योजना बना रहा है। आज स्थिति यह उत्पन्न हो गई है कि दुनिया के साधन जनसंख्या के भार को सहन करने में अपने को असफल महसूस कर रहे हैं। जनसंख्या की तीव्र वृद्धि से भोजन वस्त्र एवं आवास की समस्या विकराल होती जा रही है।

भारत के संदर्भ में यदि जनसंख्या वृद्धि की प्रवृति की तरफ ध्यान दिया जाय तो स्पष्ट होता है कि भारत की जनसंख्या सम्बन्धी स्थिति वास्तव में भयावह है। इस सम्बन्ध में यहाँ जो आंकड़े प्रस्तुत किए जा रहे हैं, अत्यन्त रोंगटे खड़े कर देने वाले हैं।

भारत की जनसंख्या वर्ष 1991 मे 84.6 करोड़ थी जो 2011 में बढ़कर 1 अरब 30 करोड़ से भी अधिक हो गई हैं। प्रत्येक वर्ष भारत की जनसंख्या में श्रीलंका की सम्पुर्ण जनसंख्या के बराबर वृद्धि हो जाती है। चार वर्ष में भारत की जनसंख्या उतनी बढ़ जाती है कि जितनी कि ब्रिटेन की कुल जनसंख्या है। भारत की जनसंख्या वृद्धि गिनती में संयुकत राज्य अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस तथा जर्मनी की जनसंख्या वृद्धि के कुल योग के बराबर होती है। वर्तमान भारत की जनसंख्या 1 अरब 30 करोड़ है। स्मरणीय है कि 1850 ई० में 100 करोड़ ही सम्पूर्ण संसार की जनसंख्या थी। अतः भारत की जनसंख्या में जिस तीव्र गति से वृद्धि हो रही है, वह निश्चित रूप से चिन्ता का विषय है।

जनसंख्या वृद्धि की दृष्टि से विश्व में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है। पृथ्वी पर हर छठवाँ व्यक्ति भारतीय है। जनसंख्या में वृद्धि के फलस्वरूप नियोजित आर्थिक विकास के सारे प्रयास निष्फल सिद्ध हो रहे हैं तथा देश में भोजन, वस्त्र एवं आवास की समस्या विकराल होती जा रही है। अद्‌भुत औषधियों के अन्वेषण और आर्थिक सम्पन्नता में सतत् सुधार के परिणामस्वरूप मृत्यु की सम्भावना घटती जा रही है, लेकिन उसी अनुपात में जन्म दर में कमी नजर नहीं आ रही है। फलस्वरूप जनसंख्या में अभूतपूर्व वृद्धि होती जा रही है। इस तरह जन्म दर एवं मृत्यु दर के बीच यह दुरी जैसे–जैसे बढ़ती जा रही है वैसे–वैसे कुल जनसंख्या में वृद्धि होती जा रही है।

भारत में जनसंख्या वृद्धि के अनेक कारण हैं। इन समस्त कारणों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता हैः–

I उच्च जन्म दर तथा उसको प्रेरित करने वाले कारक

II मृत्यु दर में निरन्तर आती गिरावट।

III ऊँची जन्म दर के कारणों में शिक्षा का भिन्न परम्परावादी समाज, धार्मिक अंधविश्वास, संयुक्त परिवार, लड़कों का महत्त्व समाज में महिलाओं का कम सम्मान आर्थिक कारण, आयु संरचना एवं जलवायु, ग्रामीण समाज, सबका विवाह होना तथा विवाह की आयु का नीचा होना शामिल है।

मृत्यु दर में कमी– भारत में विगत 80 वर्षों से मृत्यु दर में पर्याप्त गिरावट आयी है वर्ष 1901–11 के दशक में भारत में मृत्यु दर 42.6 प्रति हजार थी जो क्रमशः घटते हुए 1980–81 में लगभग 10.8 रह गई। वर्तमान में मृत्यु दर लगभग 6.7 प्रति हजार है। इसका प्रमुख कारण लोगों की आय में वृद्धि तथा रहन सहन के स्तर में सुधार साक्षरता में वृद्धि, मनोरंजन के साधनों में वृद्धि, विवाह की आयु में वृद्धि, अंधविश्वासों में कमी, शहरीकरण में वृद्धि तथा परिवारण नियोजन के प्रति लोगों का बढ़ता रूझान आदि है।

इस तरह भारत में जन्म दर में वृद्धि तथा मृत्यु दर में आधी कमी के फलस्वरूप जनसंख्या में वृद्धि होना स्वाभाविक है।

आजादी प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने जनसंख्या विस्फोट को रोकने के लिए परिवार नियोजन कार्यक्रम चलाया तथा इस कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को जनसंख्या विस्फोट के दुष्परिणामों से अवगत कराया गया। भारतवसियों को जनसंख्या नियंत्रण के कृत्रिम साधनों से परिचित कराया गया।

निःशुल्क गर्भ निरोधक सामग्रीयाँ वितरीत की गई तथा बन्धाकरण एवं नसबन्दी की मुत में किया गया और किया जा रहा है।

***एम०ए० पी–एच डी० (समाजशास्त्र) ग्राम मोहीउद्दीनपुर, हांसाडीह, मसौढ़ी (पटना)**

भारत सरकार जनसंख्या के साधनों के द्वारा प्रचार–प्रसार में कोई कमी नहीं की। फिर भी जनसंख्या वृद्धि को रोकने में हम सफल नहीं हो पाये।

अतः जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए शिक्षा आवश्यक है। कोई समाज विकास के किस स्तर पर है, यह बात वहाँ के लोगों के शैक्षिक स्तर पर निर्भर करता है। शिक्षा सामाजिक, आर्थिक प्रगति की सूचक है, लोगों की शिक्षा पर समाज एवं देश का भाग्य निर्भर करता है।

शिक्षा मनुष्य को समाज का एक उपयोगी अंग बनाने की प्रक्रिया है। इसका प्रमुख कार्य मनुष्य के जीवन के विभिन्न पक्षों जैसे बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक आदि का सर्वांगीण विकास करना है। इस दृष्टि से शिक्षा को चहुँमुखी विकास की प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है। यह मनुष्य के रहन–सहन चिंतन आदि में निरन्तर परिवर्तन करती रहती है ताकि मनुष्य अपने आपको आध्यात्मिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार ढ़ाल सके अथवा अनेक सामाजिक परिस्थितियों को अपने अनुकूल कर सके।

अतः भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकने के लिए शिक्षा की उपयोगिता को नजर–अंदाज नहीं किया जा सकता।

शिक्षा का प्रसार : शिक्षा से जनता में जागृति उत्पन्न होती है और लोग छोटे परिवार के महत्त्व को समझते हैं। छोटे परिवार के महत्त्व को समझने के लिए यह आवश्यक है कि अनिवार्य शिक्षा के व्यापक योजना बनायी जाये। राष्ट्रीय प्रतिवर्ष सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हुआ है कि इंटरमीडियट तथा उससे अधिक शिक्षित औरतों को 2.7 बच्चे मैट्रिक तक पढ़ी औरतों को 4.2 बच्चे, मिडिल तथा पढ़ी औरतों को 4.5 बच्चे तथा अशिक्षित औरतों को औसतन 7.7 बच्चे होते हैं– संक्षेप में परिवार–नियोजन के विस्तार से प्रमुख लाभ निम्नलिखित होंगे–

(अ) शिक्षित दम्पत्ति परिवार–नियोजन संबंधी सेवाओं के महत्त्व को भी स्वीकार करता है? यदि उसे इनके प्रति किसी प्रकार की शंका है तो वह इनका निवारण कर लेता है और इसी तरह परिवार–नियोजन के साधनो ंसे अपने आप को अवगत रखता है।

(ब) जब लड़कियाँ स्कूल में पढ़ने जाती हैं तो प्रायः उनके विवाह में कुछ समय की देरी हो जाती है। फलतः उनकी प्रजनन अवधि कम हो जाती है अर्थात् वे कम बच्चे पैदा करने की स्थिति में होती हैं।

(स) शिक्षित परिवारों में शिशु मृत्यु दर भी कम होती हे, क्योंकि शिक्षित माँ बाप सफाई और स्वास्थ्य के महत्त्व को जानते हैं। फलतः उन्हें विश्वास हो जाता है कि बच्चे की मृत्यु अल्पकाल में नहीं होगीं जब माँ को इस बात का विश्वास हो जाता है कि उनका बच्चा अल्पायु नहीं है तो वह अधिक बच्चों की इच्छा नहीं करती है।

(द) शिक्षित लड़कियाँ प्रायः नौकरी करने की इच्छुक होती हैं, प्रायः जो लड़कियाँ नौकरी करती हैं वे कम बच्चों की ही माँ बनना पसंद करती हैं क्योंकि अधिक बच्चे उनके लिए भार बन जाते हैं।

(य) शिक्षित माँ–बाप अपने बच्चों को भी उच्च शिक्षा प्रदान करने के इच्छुक होते हैं और वे इस तथ्य को जानते हैं कि यदि बच्चों के उच्च शिक्षा के साधन उपलब्ध करवाने हैं तो परिवार का आकार संकुचित ही रखना होगा।

संदर्भ सूची

1. वी.सी. खरे एवं वी.सी. सिन्हा : सामाजिक जनांकिकी एवं भारत में जनस्वास्थ्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली, 1985.
2. जी० आर० मदन : विकास का समाजशास्त्र, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर दिल्ली–7.
3. डॉ० जयप्रकाश मिश्र : जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2003.
4. प्रो० एम०एल० गुप्ता एवं डी०डी० शर्मा : समाजशास्त्र प्रतियोगिता साहित्य सीरीज, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2002.